4

अभ्यास गान का परिचय

(सरली वरीसई से स्वरजाति तक)

भारतीय संगीत को सीखने के लिये इसके सूक्ष्म तत्त्वों को समझना और सराहना अत्यंत आवश्यक है। अत: एक उचित शिक्षा प्रणाली की योजना बनाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है जो विद्यार्थी को संगीत के लययुक्त और स्वरयुक्त दोनों पक्षों में प्रवीणता प्राप्त कराने में सक्षम हो। कर्नाटक शास्त्रीय संगीत का वर्गीकरण अभ्यास गान- अभ्यास के लिये संगीत और सभा गान- सभाओं में संगीत प्रस्तुति के अंतर्गत किया गया है। अभ्यास गान संगीत में मूल अध्याय हैं जो विद्यार्थी को संगीत कला के आधारभूत ज्ञान से परिचित कराते हैं। अभ्यास गान में सरली वरीसई, जनता वरीसई, हेच्चु स्थान वरीसई, तग्गु स्थान वरीसई, दातु वरीसई, अलंकार गीत, जातिस्वर, स्वरजाति और वर्ण अध्याय सम्मिलित हैं। इन तकनीकी रूपों का जब मौखिक और वाद्य दोनों में अभ्यास किया जाता है तो विद्यार्थी को श्रुति, स्वर और लय ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है। परंतु अभ्यास गान के समूह में सम्मिलित वर्ण अपनी आवाज या वाद्य बजाने के लिये हाथों को गर्म करने के लिये सभा गान के आरंभ में भी प्रस्तुत किये जाते हैं। रचनाओं में कृतियां, राग मालिका, पद, जावली, कीर्तन, तिल्लाना, राग, तान, पल्लवी इत्यादि के मेलडी रूप सम्मिलित हैं।

श्री पुरंदर दास ने, जिन्हें कर्नाटक संगीत का पितामह कहा जाता है, कर्नाटक संगीत के मूल अध्यायों को संगठित किया। उन्होंने राग मायामालवगौल के मूल अध्यायों को सूत्रित किया। कटपयदी सूत्र में राग की पारिभाषिक शब्दावली के लिये 'माया' शब्द बाद में लगाया गया परंतु तब तक इसे मालवगौल ही कहते थे। राग मायामालवगौल एक संपूर्ण राग है। यह 15वां मेल है। इस जनक राग के स्वर हैं: षड्ज (स), ऋषभ ($री_1$), अंतर गंधार ($ग_3$), शुद्ध मध्यम ($म_1$), पंचम (प), शुद्ध धैवत ($ध_1$), काकली निषाद ($नि_3$)। स्वरों के क्रमानुसार रूप से चढ़ने को आरोहन कहते हैं और स्वरों के उतरने के क्रम को अवरोहन कहते हैं।

आरोहन : स री ग म प ध नि सं

अवरोहन : सं नि ध प म ग री स

चूंकि स्वर के प्रत्येक जोड़े का अंतर, यथा सरी- गम- पध- निस समान है, एक प्राथमिक विद्यार्थी को सरगम प्रस्तुत करने में सरलता होगी। अत: यह राग कर्नाटक

संगीत की आरंभिक राग बन गई। हिंदुस्तानी संगीत की राग बिलावल (कर्नाटक संगीत की राग शंकराभरण के समतुल्य) अभ्यास गान में प्रयुक्त होती है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी:

- उचित स्वर स्थानों में स्वरों के प्रकार का वर्णन कर पायेगा
- तीन स्थान तथा विभिन्न गतियों का विवरण कर पायेगा
- स्वरों के विभिन्न प्रतिरूपों का वर्णन कर पायेगा
- उचित ताल और स्वर में रचना लिख पायेगा

4.1 सरली वरीसई

गायन और वाद्य संगीत में सरली वरीसई मूलभूत अभ्यास है। वरीसई राग मायामालवगौल में गाये-बजाये जाते हैं, जो प्राथमिक विद्यार्थी के गायन और वाद्य संगीत सीखने के लिये उचित हैं। इस राग में दो स्वर संवाद हैं, यथा, शुद्ध ऋषभ (री1) तथा शुद्ध धैवत ($ध_1$) और अंतर गंधार ($ग_3$) तथा काकली निषाद ($नि_3$)।

आरोहन : स $री_1$ $ग_3$ $म_1$ प $ध_1$ $नि_3$ सं

अवरोहन : सं $नि_3$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_3$ $री_3$ स

यह राग प्राथमिक विद्यार्थियों के सीखने के लिये सरल है क्योंकि स्वर एक दूसरे से संतुलित दूरी पर हैं। यहां पूर्वांग या प्रथम अर्ध तथा उत्तरांग या दूसरा अर्ध समान हैं। यह विद्यार्थी को आसानी से राग प्रस्तुत करने में सहायक है। सरली वरीसई एक सप्तक में मध्य षड्ज से आरंभ होकर तार षड्ज तक हैं। प्रथम अध्याय में संपूर्ण सात स्वर आरोहन में उत्तरोत्तर रूप से हैं जिसके पश्चात वही स्वर अवरोहन में भी हैं। सरली वरीसई का महत्त्वपूर्ण लक्षण उनका क्रम है जिसमें उनकी रचना हुई है। वरीसई क्रमश: बढ़ते हैं जिससे विद्यार्थी स्वरों के मध्य अंतराल के विषय में सीखता है। प्रथम वरीसई प्रगति में नियमित हैं जैसे पहले बताया है। दूसरे वरीसई ऋषभ तक जाते हैं और ऋड्ज तक वापस आते हैं।

स्वरों का अवरोह भाग क्रमश: कम होता है।

टिप्पणी

स रि स रि । स रि । ग म ॥ स रि ग म । प ध । नि सं ॥
सं नि सं नि । सं नि । ध प ॥ सं नि ध प । म ग । रि स ॥

सभी सरली वरीसई में विभिन्न परिवर्तन और संगम सहित स्वरों का सुंदर संयोजन है। कुछ वरीसई में दीर्घ अक्षर जैसे प,य या म, य होंगे जो विद्यार्थी को अपनी धवनि को एक स्थान पर स्थिर करने में सहायक है। ताल पक्ष के अंतर्गत सरली वरीसई आदि ताल में 8 अक्षरकाल युक्त होते हैं। पूर्वांग (पहला भाग) में 4 अक्षरों के साथ 1 लघु और उत्तरांग (दूसरा भाग) में 4 अक्षर और 2 द्रुत होते हैं।

प्रथम अभ्यास में

प्रथम भाग स रि ग म में 1 लघु है अर्थात् 4 अक्षर के साथ अंगुलियों को गिनना। दूसरा भाग प ध 1 द्रुत के साथ और नि सं अन्य द्रुत के साथ है।

(1 द्रुत का अर्थ है एक ताली और एक संकेत जो 2 अक्षरों के बराबर है)

अत: प्रथम सरली वरीसई के आरोहन और अवरोहन दोनों में 8 अक्षर हैं। सरली वरीसई को प्रस्तुत करने की तीन गतियां हैं। प्रथम गति या कला में 1 मात्रा (बीट) के लिये 1 स्वर है।

x 1 2 3 । x √ x √
स रि ग म । प ध । नि सं ॥
सं नि ध प । म ग । रि स ॥

(चिन्ह x ताली को दर्शाता है और 1, 2, 3 हथेली को घुमाना दर्शाता है)

दूसरी गति में 1 मात्रा के लिये 2 स्वर हैं

x 1 2 3 x √ √ x √
स रि ग म प ध नि सं । सं नि ध प । म ग रि स ।

तीसरी गति में 1 मात्रा के लिये 4 स्वर हैं

x 1 2 3 x √ √ x √
सरिगम पधनिसं संनिधप मगरिस । सरिगम पधनिस संनिधप मगरिस ॥

यहां तीसरी गति में पहले अध्याय की प्रस्तुति 2 बार ताल की बनावट को पूरा करने के लिये करनी होगी। राग मायामालवगौल के सरली वरीसई को जानने के बाद विद्यार्थी उन्हीं वरीसई को विभिन्न रागों में जैसे शंकराभरण या खरहरप्रिय में अभ्यास कर सकता है।

टिप्पणी

4.1 जनता वरीसई

अभ्यास गान में सरली वरीसई के पश्चात दूसरे अध्याय में जनता वरीसई होते हैं। जनता का अर्थ द्विगुणित है। इस अध्याय में द्विगुणित स्वर हैं जो विद्यार्थी को द्विगुणित स्वर प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करते हैं। जनता स्वरों में एक स्वर दो बार दोहराया जायेगा जिसमें दूसरे स्वर पर जोर दिया जायेगा। ये सही स्वर स्थान सहित एक ही स्थान पर स्वर को दो बार गाने या वाद्य पर बजाने के लिये विद्यार्थी को योग्य बनाते हैं। ये अध्याय मायामालवगौल राग में भी संयोजित किये गये हैं और आदिताल में बद्ध हैं। जनता वरीसई सरली वरीसई से कुछ अधिक विकसित हैं। यद्यपि पहला अध्याय एक क्रमशः विकास है, जैसे:-

x	1	2	3		x	√	x	√	
स स	रि रि	ग ग	म म	।	प प	ध ध	नि नि	सं सं	॥
सं सं	नि नि	ध ध	प प	।	म म	ग ग	रि रि	स स	॥

बचे हुए अध्यायों में भिन्न सम्मिश्रण हैं। यहां विद्यार्थी सभी अंतराल सीख सकेगा जो एक सप्तक में स्वरों के बीच में होते हैं।

x	1	2	3		x	√	x	√	
स स	रि रि	ग ग	म म		रि रि	ग ग	म म	प प	॥
ग ग	म म	प प	ध ध	।	म म	प प	ध ध	नि नि	॥
प प	ध ध	नि नि	सं सं	।	सं सं	नि नि	ध ध	प प	॥
सं सं	नि नि	ध ध	प प	।	म म	ग ग	रि रि	स स	॥

यहां विद्यार्थी म और रि य प और गय ध और मय नि और पय प और स के बीच अंतराल को सीख सकेगा। विद्यार्थी को सही स्थान ऋषभ पर आना पड़ेगा। जनता वरीसई में ताल गिनती पहली कला में प्रत्येक स्वर के लिये एक क्रिया होगी।

x	x	1	1	2	2	3	3	।	
ससरिरि	गगमम	रिरिगग	ममपप	गगमम	पपधध	ममपप	धधनिनि	।	
x	x	*	*	x	x	*	*		
पपधध	निनिसंसं	संसंनिनि	धधपप	निनिधध	पपमम	धधपप	ममगग	॥	तीसरी गति में

अतः दूसरे अध्याय में विद्यार्थी को प्रस्तुति के लिये पहली गति में ताल का एक आवर्त, दूसरी गति में पूरे अध्याय को दो बार और तीसरी गति में अध्याय को चार बार पूरा करना होता है। जनता वरीसई का कठिन अभ्यास विद्यार्थी को बाद की अवस्थाओं में स्फुरित, तिरिप, आहत इत्यादि गमक गाने के योग्य बनाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. अभ्यास गान क्या है?
2. सरली वरीसई क्या है?
3. 'जनता' शब्द की परिभाषा दीजिये।
4. अभ्यास गान के लिये किस राग का प्रयोग किया जाता है।
5. कर्नाटक संगीत के मूल अध्यायों को किसने बनाया?

4.3 तार स्थान वरीसई अथवा हेच्चु स्थान वरीसई

सरली और जनता वरीसई जो मध्य सप्तक या स्थान में है सीखने के पश्चात विद्यार्थी भिन्न सप्तक या स्थान में प्रस्तुति करना सीखते हैं। तार स्थान या हेच्चु स्थान का अर्थ उच्च सप्तक है जो तार षड्ज के ऊपर के स्वर हैं। इन वरीसई में स्वरों का व्यवस्थित रूप से क्रमशः विकास उच्च सप्तक स्वरों तक पहुंचता है और अवरोहन क्रम में समाप्त होता है।

प्रथम वरीसई में स्वर तार ऋषभ, दूसरे में तार गंधार और बाद में मध्यम और पंचम तक जाते हैं। तार स्थान स्वर में उस स्वर पर बिंदु लगाते हैं। इन अभ्यासों से विद्यार्थी स्वरों को उच्च श्रेणी में प्रस्तुत करने के योग्य बनता है। सामान्यतया तीन गतियों में 3-4 तार स्थान वरीसई उच्च सप्तक स्वरों को प्रस्तुत करने के लिये सिखाये जाते हैं। ये राग मायामालवगौल में गाये जाते हैं और आदिताल में बद्ध होते हैं।

उदाहरण

x	1	2	3		x	√	x	√		x	1	2	3		x	√		x	√
स	रि	ग	म	।	प	ध	नि	सं	॥	सं	.	.	.	।	सं	.	।	स	.
ध	नि	स	रिं	।	गं	मं	ग	रिं	॥	सं	रिं	सं	नि	।	ध	प	।	म	प
ध	नि	स	रिं	।	गं	रिं	स	रिं	॥	सं	रिं	सं	नि	।	ध	प	।	म	प
ध	नि	सं	रिं	।	सं	नि	ध	प	॥	सं	नि	ध	प	।	म	ग	।	रि	स

(each row ends with ॥)

4.4 मंद्र स्थान अथवा तग्गु स्थान वरीसई

मंद्र स्थान अथवा तग्गु स्थान का अर्थ निम्न सप्तक है। मध्य षड्ज के नीचे स्थित स्वर मंद्र स्थान स्वर कहलाते हैं। यहां स्वर व्यवस्थित अवरोह क्रम में होते हैं। पहले वरीसई का मंद्र निषाद, दूसरे का मंद्र धैवत और अंतिम का पंचम तक अवरोह होता है। ये वरीसई आरोह क्रम में तार षड्ज में समाप्त होते हैं। मंद्र स्थान वरीसई नीचे क्रमशः बिंदु लगाकर लक्षित करते हैं और ये अध्याय

टिप्पणी

विद्यार्थियों को निम्न सप्तक स्वर प्रस्तुत करने के योग्य बनाते हैं। समान्यतया तीन गति में 3-4 मंद्र स्थान अभ्यास विद्यार्थी को निम्न सप्तक में प्रस्तुति करना सिखाते हैं।

उदाहरण

x	1	2	3		x	√		x	√		x	1	2	3		x	√		x	√	
सं	नि	ध	प	।	म	ग	।	रि	स	॥	स	.	.	.	।	स.		।	.	.	॥
ग	रि	स	नि	।	ध	प	।	ध	नि	॥	स	नि	स	रि	।	ग	म	।	प	म	॥
ग	रि	स	नि	।	स	रि		ग	म	॥	स	रि	ग	म	।	प	ध	।	नि	सं	॥

4.5 दत्तु वरीसई (वक्र वरीसई)

दत्तु का अर्थ है उछलना अथवा कूदना। दत्तु वरीसई में स्वरों की बनावट इस प्रकार होती है कि क्रम संचार के साथ एक, दो अथवा तीन स्वर व्यवस्थित रूप से उछलते हैं। वरीसई विद्यार्थी को प्रत्येक स्वर स्थान पर अच्छा नियंत्रण करने की शिक्षा में सहायक हैं। दत्तु वरीसई राग मायामालवगौल में हैं और आदिताल में बद्ध हैं। दत्तु वरीसई तीन गतियों में प्रस्तुत किये जाते हैं।

उदाहरण

x	1	2	3		x	√		x	√		x	1	2	3		x	√		x	√	
स	म	ग	म	।	रि	ग	।	स	रि	॥	स	ग	रि	ग	।	स	रि	।	ग	म	॥
रि	प	म	प	।	ग	म	।	रि	ग	॥	रि	म	ग	म	।	रि	ग	।	म	प	॥
ग	ध	प	ध	।	म	प	।	ग	म	॥	ग	प	म	प	।	ग	म	।	प	ध	॥
म	नि	ध	नि	।	प	ध	।	म	प	॥	म	ध	प	ध	।	म	प	।	ध	नि	॥
प	सं	नि	सं	।	ध	नि	।	प	ध	॥	प	नि	ध	नि	।	प	ध	।	नि	सं	॥
स	प	ध	प	।	नि	ध	।	सं	नि	॥	सं	ध	नि	ध	।	सं	नि	।	ध	प	॥
नि	म	प	म	।	ध	प	।	नि	ध	॥	नि	प	ध	प	।	नि	ध	।	प	म	॥
ध	ग	म	ग	।	प	म	।	ध	प	॥	ध	म	प	म	।	ध	प	।	म	ग	॥
प	रि	ग	रि	।	म	ग	।	प	म	॥	प	ग	म	ग	।	प	म	।	ग	रि	॥
म	स	रि	स	।	ग	रि	।	म	ग	॥	म	रि	ग	रि	।	म	ग	।	रि	स	॥

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 4.2

1. राग मायामालवगौल के विषय में संक्षेप में लिखिये।
2. दत्तु वरीसई कौन सी ताल में बद्ध किये जाते हैं और उसमे कितने अक्षर होते हैं?
3. संगीत में तीन स्थानों के नाम बताइये।
4. दत्तु वरीसई की परिभाषा बताइये।

4.6 अलंकार

अलंकार शब्द का अर्थ अलंखृत करना या सजाना है। अभ्यास गान के क्षेत्र में अलंकार एक विशेष ताल में बद्ध लयात्मक स्वर प्रतिरूपों का समूह है। राग मायामालवगौल में सात अलंकार सूलादि सप्त तालों में बद्ध हैं जिनके नाम धरुव ताल, मत्य ताल, रूपक ताल, झंपा ताल, त्रिपुट ताल, अता ताल और एक ताल हैं।

तीन गतियों में अलंकार सीखना विद्यार्थी के लिये भिन्न स्वर प्रतिरूपों, भिन्न अंगों के साथ अलग ताल और उन्हें काम में लेने की विधि का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है- यह क्रिया है। स्वर प्रतिरूप इस प्रकार रचे जाते हैं कि विद्यार्थी निरंतर प्रगतिशील स्वर को प्रस्तुत करना सीखने के अतिरिक्त आगे और पीछे की गतियों से परिचित भी हो जाते हैं।

सप्त ताल अलंकारों के अंग और उनके चिह्न हैं लघु (।), द्रुत (0) तथा अनुद्रुत (U) जो इस प्रकार हैं:-

1. धरुव ताल में 1 लघु (।), 1 द्रुत (0), 2 लघु (।) (।)
2. मत्य ताल में 1 लघु (।), 1 द्रुत (0), 1 लघु (।)
3. रूपक ताल में 1 द्रुत (0), 1 लघु (।)
4. झंपा ताल में 1 लघु (।), 1 अनुद्रुत (U), 1 द्रुत (0)
5. त्रिपुट ताल में 1 लघु (।), 2 द्रुत (0) (0)
6. अता ताल में 2 लघु (।) (।), 2 द्रुत (0) (0)
7. एक ताल में केवल एक लघु (।) है

उदाहरण

4.6.1 चतुस्र जाति मत्य ताल

अंग: |0| = 4 + 2 + 4 = 10 अक्षर

x	1	2	3		x	√		x	1	2	3	
स	रि	ग	रि	।	स	रि	।	स	रि	ग	म	॥
रि	ग	म	ग	।	रि	ग	।	रि	ग	म	प	॥
ग	म	प	म	।	ग	म	।	ग	म	प	ध	॥
म	प	ध	प	।	म	प	।	म	प	ध	नि	॥
प	ध	नि	ध	।	प	ध	।	प	ध	नि	सं	॥
सं	नि	ध	नि	।	सं	नि	।	सं	नि	ध	प	॥
नि	ध	प	ध	।	नि	ध	।	नि	ध	प	म	॥
ध	प	म	प	।	ध	प	।	ध	प	म	ग	॥
प	म	ग	म	।	प	म	।	प	म	ग	रि	॥
म	ग	रि	ग	।	म	ग	।	म	ग	रि	स	॥

पाठगत प्रश्न 4.3

1. अलंकार क्या होते हैं?
2. अलंकार के लिये कितनी तालों का प्रयोग होता है?
3. सूलादि सप्त तालों का नाम बताइये।
4. सूलादि सप्त तालों के अंग लिखिये।

4.7 गीत

कर्नाटक संगीत के अध्ययन में एक विद्यार्थी को यह मालूम होता है कि गीत सबसे सरल रचना है। मोटे तौर पर इसके दो प्रकार हैं जिन्हें लक्ष्य गीत और लक्षण गीत कहते हैं। जैसा इसके शब्दों से विदित होता है, लक्ष्य गीत प्राथमिक विद्यार्थी को राग के विषय में बताता है जिससे वह इसे राग के प्रतिरूप की भांति रख सकते हैं। लक्षण गीत कई वर्गों जैसे पिल्लरी गीत और संचारी गीत में दिखाई देता है। जैसा की शब्द से विदित होता है पिल्लरी गीत भगवान गणेश के विषय में बताता है जबकी संचारी गीत हिंदु पौराणिक देवी- देवताओं की प्रशंसा में हैं। पुरंदर दास राग मल्हारी में विशेषतया भगवान गणेश के नाम में इन रचनाओं के प्रथम रचयिता हैं। संचारी गीत विभिन्न रागों में हैं जैसे कल्याणी, महन, कांबोजी इत्यादि। उदाहरण के लिये:

टिप्पणी

उदाहरण

रागरू मलहारी **तालः चतुरस्रजाति**

रूपक

15वें मेल मायामालवगौल जन्य

आरोहनः स रि म प ध स

अवरोहनः स ध प म ग रि स

राग मल्हारी में षड्ज और पंचम के अतिरिक्त शुद्ध ऋषभ, अंतर गंधार, शुद्ध मध्यम और शुद्ध धैवत स्वर लिये जाते हैं। इस राग के आरोहन में गंधार वर्ज्य (निष्कासित) है और निषाद आरोहन और अवरोहन दोनों में वर्ज्य है।

x	√		x	1	2	3		x	√			x	1	2	3
म	प	।	ध	सं	सं	रिं	॥	रिं	सं	।	ध	प	म	प	॥
श्री	–		ग	न	ना	थ		सिं	दु		–	र	वर	न	
रि	म	।	प	ध	म	प	॥	ध	प	।	म	ग	रि	स	॥
क	रु		ना	सा	ग	र		क	री		व	द	न	–	
स	रि	।	म,	ग	रि	स	॥	रि	ग	।	रि	स,			॥
लं	–		बो	–	द	र		ल	कु		मी	क	र	–	
रि	म	।	प	ध	म	प	॥	ध	प	।	म	ग	रि	स	॥
अं	–		बा	–	सु	त		अ	म		र	वि	नु		त

लंबोदर लकु मीकर ॥

सिद्धि चरन गनसेवित

सिद्धि विनायक ते नमोनमः ॥ लंबोदर ॥

सकल विद्यादि पूजित

सर्वोत्तम ते नमोनमः ॥ लंबोदर ॥

पाठगत प्रश्न 4.4

1. गीत क्या है?

2. गीत के प्रकारों के नाम बताइये।

टिप्पणी

3. पिल्लरी गीत को किसने रचा था?

4. मल्हारी राग के राग लक्षण बताइये।

राग जगनमोहिनी **त्रिपुट ताल 3+2+2=7**

आरोहन: स ग3 म1 प नि3 सं

आरोहन: सं नि3 प म1 ग3 रि1 स

स , ॥ स ग म । प म । ग . ॥ म ग रि । स रि । स नि ॥
अ रे मु रा रे गरुड़ गमन

प नि सं । ग म । प म ॥ ग रि . । स नि । प नि ॥
सरसी ज न यन ज ग न्ना

स ग रि । स . । स . ॥ स ग , । म , । प प ॥
थु . . रे . रे . अं . ... तर

म ग रि । स ग । म प नि प म। ग म । प म ॥
गं .. धा .. र . का . क ली . स्वर

ग ग रि । स नि । स स ॥ स ग म । प . । नि प ॥
तार शु . द्ध आ रो . . ह

सं नि प । म प । ग म ॥ ग म प । नि प । म ग
रिध व र्जित अव.रो ... ह

स ग , । म . । प प ॥ म ग रि । स रि । * नि ॥
ध . व . र्जित ॥ स ... ग्र ह . न्या .

स ग म । प . । नि प ॥ सं नि प । म प । ग म ॥
स .. . अंश त्रिपुस यु ... क्त

ग म प । नि प । म ग ॥ म नि म । प म । म ग ॥
माया मा लव गौल मे ल

म ग रि । स रि । स नि ॥ प नि स । ग . । रिस ॥
जनित जग न मो .. हि .. नी

स ग म । प नि । सं सं ॥ नि प म । ग रि । सनि ॥
माधव ..राय श्री रा म..

स ग . । रि . । स . ॥
नमो न मो

4.7.1 लक्षण गीत

लक्षण गीत गीतों का दूसरा रूप हैं। यदि संचारी गीत देवताओं की प्रशंसा में होते हैं, तो लक्षण

टिप्पणी

गीत एक राग की विशेषताओं का वर्णन करते हैं। साहित्य भाग में राग के नाम, उसकी जनक राग (यदि यह जन्य राग है), राग में प्रयोग किये जाने वाले स्वरों का वर्णन, यदि वक्र है या वर्ज्य, उसके ग्रह, अंश और न्यास स्वर, यहां तक कि ताल जिसमें गीत की रचना की गई है उसका भी उल्लेख किया जायेगा। प्राचीन समय में जब स्वरलिपियां उपलब्ध नहीं थीं, लक्षण गीत विद्यार्थियों को राग लक्षण याद करने में सहायक होते थे। श्री गिविंदाचार्य और पैदल गुरुमूर्ति शास्त्री ने कई लक्षण गीतों की रचना की, उदाहरण के लिये राग जगनमोहिनी लक्षणरू त्रिपुट ताल

4.8 जाति स्वर

जाति स्वर अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है जिसे गीत के पश्चात सिखाया जाता है। जाति स्वर में केवल स्वर समुदाय होते हैं जो जाति पदों के प्रारूप हैं अतः उन्हें जाति स्वर कहा जाता है। स्वरों का मिश्रण जनता, दत्तु इत्यादि से बना है जो मध्यम और विलंबित काल में हैं। ये रचनायें केवल स्वर पदों से बनी हैं और स्वर पल्लवी भी कहलाती हैं। जाति स्वर ह्रस्व और दीर्घ दोनों स्वरों से निर्मित हैं और इन रचनाओं के लिये साहित्य नहीं है परंतु ये वाक्यांश मृदंग जति जैसे कई प्रारूपों से निर्मित हैं। जाति स्वर में पल्लवी और कई स्वर हैं। चरणों में विभिन्न दत्तु हैं। इनकी नृत्य सभाओं में भी प्रस्तुति होती है। जाति स्वर के गान क्रम में पल्लवी के पश्चात चरण आते हैं तथा प्रत्येक चरण के अंत में पल्लवी दोहराई जाती है।

सामान्यतया जाति स्वर आदि, रूपक ताल परंतु कभी-कभी अन्य सूलादि ताल और चप्पु ताल में भी बद्ध होते हैं। साधारणतया वे सामान्य और रक्ति रागों परंतु बहुत कम दुर्लभ रागों में रची जाती हैं। कुछ जाति स्वरों में चरणों में भिन्न गतियों का प्रयोग होता है।

4.9 स्वर जति

स्वर जति अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है जिसे स्वर और साहित्य सहित जाति स्वरों के पश्चात सिखाया जाता है। स्वर जति में कुछ विभाग हैं जो पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण कहलाते हैं। चरणों में विभिन्न धातु हैं। सभी चरण एक ही लंबाई के या क्रमशः बढ़ते हुए हो सकते हैं। सभी रचनाओं में साहित्य होता है और प्रायः एक स्वर वाक्यांश के लिये एक साहित्य वाक्यांश होगा। स्वर जति जाति सहित नृत्य रूप की भांति उत्पन्न हुई है।

सामान्यतया पल्लवी के साहित्य की प्रस्तुति के पश्चात चरणों के स्वर और साहित्य दोनों की प्रस्तुति होती है और प्रत्येक चरण के पश्चात पल्लवी को दोहराया जाता है। यहां प्रयुक्त राग और ताल जाति स्वर के समान होती हैं। स्वर हस्व और दीर्घ दोनों स्वरों का मिश्रण है। दीर्घ स्वर के लिये साहित्य एक वाक्यांश या दीर्घ अक्षर के लिये एक आकार या उकार हो सकता है। यह विद्यार्थी को अगला अभ्यास- वर्ण, आसानी से प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करता है। विशेष रूप से श्री श्यामा शास्त्री द्वारा रचित कुछ स्वर जति बहुत उच्च स्तर की हैं और वे सभाओं में प्रस्तुत की जाती हैं। सामान्यतया साहित्य भक्ति या वीरता संबंधी होगा।

उदाहरण: जति स्वर

रागः **हंसधवनि**

ताल: रूपक

29वें मेल धीर शंकराभरण की जन्य राग

आरोहन: स रि ग प नि सं

अवरोहन: सं नि प ग रि स

षड्ज और पंचम के अतिरिक्त हंसधवनि में चतुश्रुति ऋषभ, अंतर गंधार और काकली निषाद होते हैं। यह एक वर्ज्य राग है। मध्यम और धैवत वर्ज्य स्वर हैं। यह औडव राग है, अर्थात आरोहन और अवरोहन में पांच स्वर हैं।

पल्लवी

स , ॥ स नि प ग ॥ रि स ॥ , नि प नि ॥ स , । स ,रिस ॥ ग , । ग , । रि ग प नि ॥

चरण

1. स , । रि नि , स ॥ प , । नि सं , रिं ॥ सं , । नि प , ग ॥ रि , । ग प , नि ॥ स , ॥

2. प नि । स रि ग प ॥ नि सं । रि ग प नि ॥ गरि । सं नि प ग ॥ रि स । रि ग प नि ॥ सं , ॥

3. ग प । रि ग स रि ॥ स नि । प , प , ॥ नि सं । रि ग प नि ॥ सं रिं । सं , सं , ॥
   ग रि । सं नि सं रिं ॥ सं नि । प , प , ॥ रिं सं । नि प सं नि ॥ प ग । रि ग प नि ॥ सं ,

4. सं , । , , सं , ॥ , , । सं रिं सं नि ॥ प , । , , प , ॥ , , । स नि प ग ॥
   र , । , , रि , ॥ , , ॥ ग र स नि ॥ सं , ॥ , , स , ॥ , , । र ग प न ॥
   सं , । , र ग र ॥ स न । प न स र ॥ नि , ॥ , स र स ॥ न प । ग प न स ॥
   रि स । , नि पग ॥ नि प ॥ , ग रि स ॥ नि स ॥ , रिग प ॥ ग प । , नि सं रिं ॥ सं ,

पाठगत प्रश्न 4.5

1. जाति स्वरों का वर्णन कीजिये।
2. जाति स्वर कौन सी गति में गाये जाते हैं?
3. स्वर जति क्या है? संक्षेप में बताइये।
4. हंसध्वनि किस मेल से ली गई है?

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

कर्नाटक संगीत शिक्षा के लिये अभ्यास गान एक आवश्यक भाग है जहां एक विद्यार्थी सरली वरीसई, जनता वरीसई, दत्तु वरीसई, मंद्र, तार स्थान वरीसई और अलंकार जैसे अभ्यासों को करता है। ये अभ्यास विद्यार्थी को उच्च स्तर के गायन की योग्यता प्रदान करते हैं। गीतं, स्वर जति, जाति स्वर जैसे अन्य रूप राग जिसमें वे रचे गये हैं और भिन्न तालों के लयात्मक ज्ञान के विषय में बताते हैं। इन रूपों का संगीत आचार्यों को भी प्रस्तुतिकरण में शुद्धता लाने के लिये अभ्यास करना आवश्यक है।

पाठांत अभ्यास

1. अभ्यास गान संगीत में मौलिक पाठ है– समझाइये।
2. दो अभ्यासों सहित सरली वरीसई संज्ञा के विषय में समझाइये।
3. जनता वरीसई पर एक अनुच्छेद लिखिये।
4. हेच्चु स्थान वरीसई और तेग्गु वरीसई में क्या अंतर है?
5. अभ्यासों सहित अलंकारों का वर्णन कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. अभ्यास गान संगीत में मौलिक पाठ है।
2. गायन और वाद्य संगीत में सरली वरीसई मूल अभ्यास हैं।
3. जनता का अर्थ दुगुना है। इन अभ्यासों में दुगुने स्वर होते हैं।
4. मायामालवगौल
5. संत पुरंदर दास

4.2

1. मायामालवगौल एक संपूर्ण राग है। यह 15वीं मेल राग है। इसमें षड्ज, शुद्ध ऋषभ, अंतर गंधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, शुद्ध धैवत, काकली निषाद हैं।

2. आदि ताल 8 अक्षर काल

3. मंद्र- मध्य- तार स्थान

4. दत्तु का अर्थ है व्यवस्थित रूप से एक या दो स्वरों का उछलना या कूदना।

4.3

1. अलंकार एक विशेष ताल में बद्ध लयात्मक स्वर प्रतिरूपों का समूह हैं।

2. अलंकारों के लिये सूलादि सप्त तालों का प्रयोग होता है।

3. धरुव, मत्य, रूपक, झंपा, त्रिपुट, अता और एक

4. धरुव- 1 लघु, 1 द्रुत, 2 लघु

   मत्य- 1 लघु, 1 द्रुत, 1 लघु

   रूपक- 1 द्रुत, 1 लघु

   झंपा- 1 लघु, 1 अनुद्रुत, 1 द्रुत

   त्रिपुट- 1 लघु, 2 द्रुत

   अता- 2 लघु, 2 द्रुत

   एक- 1 लघु

4.4

1. गीत एक सरल रचना है। यह अलंकारों के पश्चात सिखाई जाती है।

2. पिल्लरी गीत, संचारी गीत, लक्षण गीत

3. संत पुरंदर दास

4. यह मायामालवगौल की जन्य है। स्वर स्थान- षड्ज, शुद्ध ऋषभ, अंतर गंधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, शुद्ध धैवत। यह एक औड़व- षाड़व राग है। आरोहन में गंधार और निषाद वर्ज्य हैं और अवरोहन में निषाद वर्ज्य है।

4.5

1. जाति स्वर अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है जिसे गीत के पश्चात सिखाया जाता है। जाति स्वर में केवल स्वर समुदाय होते हैं जो जाति पदों के प्रारूप हैं।

2. मध्यम और विलंबित काल

टिप्पणी

3. स्वर जति अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है जिसे स्वर और साहित्य सहित जाति स्वरों के पश्चात सिखाया जाता है।

4. धीर शंकराभरण

निर्देशित कार्य कलाप

1. सभी सरली रूप जो क्रियात्मक विभाग में दिये गये हैं उनका गति की तीसरी श्रेणी में करें।

2. विद्यार्थियों के लिये सुझाव है कि सभी जनता वरीसई का अभ्यास गति की तीसरी श्रेणी में करें।

3. तार स्थान- मंद्र स्थान- दत्तु वरीसई का गति की तीसरी श्रेणी में अभ्यास करें।